# पतित पावनी माँ गंगा

डॉ. नरेश मोहन
राजभाषा समन्वयकर्ता, बी..एच.ई.एल. हरिद्वार

"इदं ब्रह्मा इदं विष्णु इदं देवो महेश्वरः।
इदमेव निराकारं निर्मलं जाह्न्वी जलम्।।"

पतित पावनी, मोक्षदायिनी, कल-कल निनादनी, सगरसुतोद्धारिणी, देवी भगवती भागीरथी माँ गंगा पुण्य सलिला रूप में पर्वतराज हिमालय की गोद में अठखेलियां करती असंख्य जीवों विशेषकर मनुष्यों को मोक्ष प्रदान करने के निमित्त हरिद्वार अथवा हरद्वार भूमि पर अवतरित हुई। सघन शैल सरणियों और शिखरावलियों से उतरकर समतल भूमि पर जाह्नवी गंगा की नई प्राकृतिक छटा का मनमोहक रूप देखते ही बनता है ।

वास्तव में मानवीय पुरुषार्थ के नैसर्गिक अभिनन्दन के रूप में माँ गंगा का अवतरण धरती पुत्रों को पाप मुक्त करने के लिए हुआ, पुण्य की साधना और पाप की वर्जना मानव मन की कमजोरी है। सत्ता, सम्पत्ति और शक्ति का मद हमें पापोन्मुख कर देता है इससे हम परमात्मा और प्रकृति से दूर हो जाते हैं । गंगा की गोद में बैठकर हम इन कलुषताओं से मुक्त हो सकते हैं। गंगा का जल तन और मन को निर्मल कर देता है।

महर्षि चरक ने गंगा जल को सर्वोत्तम पथ्य बताते हुए लिखा है– 'हिमवत्प्रभवा पथ्याः
वाणभट्ट ने इस प्रकरण को और अधिक विस्तार देते हुए कहा-"हिमवन्मलयोद्भूताः पथ्यास्ता एव च स्थिरा"
चक्रपाणी दत्त कहते हैं- "यथोक्तल क्षणहिमालय भवत्वादेय गांग पाथ्यम्"
भोजनकुतुहल ग्रन्थ में लिखा है– "शीतं, स्वादु स्वच्छमत्यन्तरूच्यं पथ्यं पाक्यं पाचनं पापहरि।
तृष्णामोह ध्वंसनं दीपनं च प्रज्ञां धत्रे वारि भागीरथीयम।।"
गीता में तो श्रीकृष्ण ने गंगा को अपना ही रूप बताया है – 'स्त्रोतसामस्मि जाह्नवी"

विष्णु के चरण, ब्रहमा के कमण्डल और शिव की जटाओं के बीच सेतु बनी देवमाता हिमपुत्री भागीरथी गंगा स्वयं ही महायोगनी स्वरूपा है। गंगा देवात्मा हिमालय की गोद से स्वर्ग की पवित्रता को लेकर धरा पर उतरती है और ऋषियों-मुनियों, महात्माओं और मुमुक्षओं के तप को सार्थक करती है। धरा के पाप को पीकर उसे पवित्र करने का महासंकल्प लेकर हरि के द्वार पर दस्तक देती है।

इसीलिए गंगा की पवित्रता के प्रति स्वतः मन-प्राण नतमस्तक हो जाते हैं:-

"नास्ति गंगासयं तीर्थं, नास्ति मातृ समो गुरूः। नास्ति विष्णुसमं दैवं, नास्ति तत्वं गुरोः परम्।
नास्ति शान्ति समो वन्धुर्नास्ति सत्यात्परं तपः। नास्ति मोक्षात्परो लाभो नास्ति गंगासमा नदी।।"

गंगा धरती और मानवीय पौरुष को स्वर्गीय पावनता से जोड़ने का लोकोत्तर कार्य करती है। पाप मोचनी मां गंगा को प्रत्यक्ष पाकर मानव मन स्वतः ही पुलकित हो जाता है। और नैसर्गिक सुख की अनुपम अनुभूति करता है। महर्षि बाल्मिकी ने तो इसी नैसर्गिकता को आत्मसात् करते हुए सर्वप्रथम जगजननी मां गंगा को नमन किया- "गांगवारि मनोहारि मुरारि चरणच्युतम। त्रिपुरारि शिरश्चारि पापहारि पुनातुमाम्।।"

त्रिलोक पावनी अमृतमयी गंगा आर्यावृत भारत की सभ्यता, संस्कृति एवं आध्यात्मिक स्पन्दन की प्राणवान पहचान है। गंगा की पवित्रता, इसकी प्रति जैविकता, इसकी पारदर्शिता, स्वच्छता एवं लौकिक मान्यता को हिन्दु ही नहीं अन्य धर्म भी स्तुत्य मान्यता देते हैं। इतिहास के पन्नों पर ऐसे उदाहरण प्रदिप्त होते देखे जा सकते हैं। सम्राट अकबर का उदाहरण सर्वविदित है। कट्टरपंथी औरंगजेब तक ने गंगा की प्रमाणिकता को स्वीकार किया है। आज सम्पूर्ण विश्व गंगा के प्रति श्रद्धानत हैं। हमें इस पर गर्व है तभी तो हम स्वाभिमान से कहते हैं- **"हम उस देश के वासी हैं, जिस देश में गंगा बहती है"**

सुरनदी, देवनदी, त्रिपथा, जाह्नवी, गोमुखी, मकरवाहिनी, जटाशंकरी, विष्णुपदी, ब्राह्मी, त्रिवेदी, अमृतदायिनी, पुण्या, जनकल्याणी, महानदी आदि नानाविध गंग नाम इसकी दिव्यता और अमरता के प्रतीक हैं। विष्णु के चरणों में विष्णुपदी, ब्रह्मा के कमण्डल में ब्राह्मी, शिव की जटाओं में जटाशंकरी का नाम गंगा ने पाया है। पद्म पुराण ने गंगा की महानता को स्वीकारा है-

ये भक्ति भावेन सरिद्धरायाः, स्पृशन्ति पाथः कणिकामपीह।
ये यान्ति नूनं पदमच्युतस्य, पापै र्विमुक्ता सकलै महोग्रै।।

आकाश गंगा, पाताल गंगा, भूलोक गंगा तथा मानसी गंगा भी लोगों की जिह्वा में रहने वाला नाम है। त्रिदेवी होने के कारण अमृत और अमृत्व को प्रदान करने वाली गंगा एक ऐसी नदी है जिसके दर्शन से, स्पर्श से और तो और मात्र नाम लेने भर से सारे पाप मिट जाते हैं-

"गंगा गंगेति यो ब्रूयात योजनानां शतैरपि।
मुच्यते सर्व पापेभ्यो विष्णुलोकं स गच्छति।। "

कहा एवं माना जाता है कि ध्रुव प्रदेश में सूर्य के मंद प्रकाश से एकत्रित होने वाला वाष्प अपस्थूल होकर जल के रूप में बदल जाता है। गुरूत्व के कारण वह वायु में ठहर नहीं पाता और सुमेरू के शिखर पर गिरता रहता है। यही जल मूलतः वह दिव्य जल है जिसे गंगा जल कहा गया है। यही गौमुख से प्रवाहित होता है।

"गौ" एक ऐसी धातु है जिसके संस्कृत में अनेक अर्थ हैं उन अर्थों में एक है धरती। गौमुख का अर्थ है वह स्थान जहां से दिव्य जल ने पहली बार धरती के दर्शन किये। लोकोक्ति के आधार पर गाय के मुख की आकृति वाले शैल खण्ड जहाँ से जलधारा आती है गौमुख कहा गया है।

साधक तपस्वी के रूप में मौन समाधिस्थ शैल पर्वतों एवं विशाल पाषाण खण्डों को स्पर्श करती पवित्र जल की यह धारा विष्णु प्रयाग में धौलीगंगा और अलकनन्दा का संगम, नन्द प्रयाग में अलकनन्दा और मन्दाकिनी का संगम, कर्णप्रयाग में अलकनन्दा और पिंदारगंगा का संगम, रुद्रप्रयाग में अलकनन्दा और मंदाकिनी का संगम तथा देवप्रयाग में अलकनन्दा और भागीरथी का संगम बनाती है। देव प्रयाग में गंगा स्वरूप धारण कर यह दिव्य स्वरूपा पवित्र धारा अपनी पवित्रता का आचमन कराते हुए इस जड़ चेतन रूपी मानव जगत को नवस्पन्दित जीवन देते हुए आगे बढ़ती है।

पौराणिक कथाओं के अनुरूप गंगा के जन्म तथा उसके जन्म के औचित्य से संबंधित अनेक कथाएं प्रचलन में हैं। सर्वमान्य कथा का सार स्वरूप यहां पर पाठकों के समक्ष देना समसामयिक एवं समीचीन होगा, अपितु कदाचित यह अपरिहार्य भी है। विषय संदर्भ इसकी मान्यता भी देता प्रतीत होता है।

मान्यता है कि शैल शिरोमणि पर्वतराज भारतभाल हिमवान और देवी मैना के आंगन में अपूर्व सौन्दर्यवान, सौम्य और सरल सलीला पुत्री ने जन्म लिया, माता-पिता ने इस पुत्री का नाम गंगा रखा। उनकी मान्यता थी कि जिसके आलौकिक स्पर्श एवं आलौकिक दर्शन मात्र से पाप मुक्त हो जाते हैं अर्थात् शाब्दिक रूप में पाप मुक्ता या पापनाशिनी ही गंगा का वास्तविक तथा सारगर्भित अर्थ हो सकता है। उस पुत्री का नाम हिमवान एवं मैना ने गंगा रखना ही संभवतः उचित माना होगा। गंगा के गुणों से प्रभावित होकर भगवान विष्णु ने हरिलोक में गंगा को ब्रहमा जी के कमण्डल में निवास करना सुनिश्चित कराया। देवयोग से कालान्तर में नानाविध कालचक्रों के प्रभाव से प्रभावित होकर भी गंगा ने अपनी पावनता और लोक कल्याण की भावना से देवलोक का कल्याण करना नहीं त्यागा। कहा जाता है कि वसु की पत्नि द्यौ के कठिन आग्रह के कारण वसु ने अपने सात वसुओं के साथ महर्षि वशिष्ठ की चहेती नंदनी का अपहरण किया। महर्षि के श्राप से ये कांतिहीन हो गये किन्तु प्रार्थना करने पर महर्षि ने वसु को सौ तथा अन्य को एक-एक वर्ष तक शापित जीवन भोगने को कहा। यही वे वसु हैं जो गंगा और शान्तनु के पुत्र के रूप में पैदा हुए थे क्योंकि कल्याणकारी गंगा ने वसुओं को उनके कल्याण का वचन दिया था। इसके अतिरिक्त एक मान्यता है कि धरती पर निशाचरों ने बड़ा कोहराम मचाया, वे रात को त्राहि मचाते और दिन में समुद्र में छिप जाते। देवगणों ने ब्रह्मा और इन्द्र के साथ विष्णु से इस समस्या से मुक्ति दिलाने की प्रार्थना की। परस्पर संवाद से यह प्रयोजन तय हुआ कि परम शक्ति से महर्षि अगस्त्य समुद्र का सम्पूर्ण जल पीवें और देवगण इस स्थिति में निशाचरों को नष्ट कर दें। देवयोग और हरिकृपा से ऐसा ही हुआ। किन्तु इसके उपरान्त आवश्यकतानुरूप जब महर्षि अगस्त्य से समुद्र को पुनः वापस लाने की याचना की गई तो यह संभव न हो सका। महर्षि ने उपाय बताते हुए कहा कि सूर्यवंशी राजा सगर के वंशज इस कार्य को सार्थक करेंगे। पुत्रहीन सगर ने अपनी पत्नि सुमति तथा केशनी के साथ कठोर तप किया। महादेव की अनुकंपा से सुमति ने साठ हजार किन्तु केशनी ने एक ही पुत्र को जन्म दिया। कथानक के अनुसार साठ हजार सुमति पुत्रों ने कपिल मुनि के आश्रम में अपने पिता राजा सगर के अश्वमेघ यज्ञ के अश्व की उपस्थिति के कारण अपशब्द प्रयोग किये परिणामस्वरूप महर्षि कपिल की क्रोधाग्नि के कारण वे भस्म हो गये। सगर पत्नि केशनी के पुत्र असमंजस के एक मात्र पुत्र अंशुमान ने कपिल मुनि के पास जाकर क्षमा याचना की। अंशुमान ने न केवल अश्व वापस लिया अपितु अपने साठ हजार भाइयों की मुक्ति का मार्ग भी जाना। कपिल मुनि के कहे अनुसार गंग जल से ही मुक्ति संभव थी। सगर की मृत्यु के पश्चात अंशुमान तथा अंशुमान के पश्चात इनके पुत्र दिलीप ने गंगा अवतरण का प्रयास किया किन्तु सफलता दिलीप पुत्र भागीरथ को ही प्राप्त हुई। भगवान विष्णु ने ब्रह्मा के कमण्डल से निकल कर शिव की जटाओं में गंगा के प्रवाह को स्थान दिया जहाँ से भागीरथ का अनुसरण करते हुए गंगा ने धरती का स्पर्श किया।

अपने उद्गम स्थल से महाविलय स्थल गंगा सागर तक की अपनी 2496 कि.मी. की यात्रा में गंगा अनेक स्वरूपों को साक्षात् एवं आत्मसात् करते हुए वृहद् होती चली जाती है। अन्य रूप से यह साक्षात् मोक्ष प्रदाता बन स्वर्गिक मार्ग प्रशस्त कराती है-

यस्य हस्तौ च पादौ च, मनश्चैव सुसंयतम्।
विद्या तपश्च कीर्तिश्च, स तीर्थ फलमश्नुते।।

*****